IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

# रज्जब की भक्ति भावना

**1 डॉ. पूजा बागड़ी**

**2 डॉ. ज्योति शर्मा**

**1 सहायक आचार्य गृह विज्ञान विभाग,**

**श्री रतनलाल कंवरलाल पाटनी गर्ल्स कॉलेज किशनगढ़, अजमेर**

**2 सहायक आचार्य हिंदी, शिक्षा विभाग,**

**श्री रतनलाल कंवरलाल पाटनी गर्ल्स कॉलेज किशनगढ़, अजमेर**

**शोध सारांश:** रज्जब मध्यकाल के निष्ठावान भक्त और साधक थे जिन की साधना पद्धति पर गुरु दादू दयाल का स्पष्ट प्रभाव दृष्टिगोचर होता है रज्जब वाणी में प्रौढता, देख बता वह स्वाभाविक ता के साथ निर्गुण ईश्वर की अनुपम भक्ति के अनेकों दृष्टांत उनकी उत्तम काव्य साधना के परिचायक है। संत समागम, गुरु भक्ति, श्रेष्ठ आत्मानुभूति से परिपूर्ण रज्जब काव्य में विरह प्रेम के सरस पदों में गहरी भक्ति भावना व सूफी मस्ती एक साथ दृष्टिगोचर होती है। रज्जब ने गुरु महिमा व निर्गुण ब्रह्म की नाम साधना को केंद्र में रख लगभग 20 वर्ष की अवस्था से रचना करना प्रारंभ किया। लगभग 122 वर्ष की अवस्था अर्थात सन् 1689 में महान भक्त व रजबावत पंथ प्रणेता रज्जब का इस संसार से महाप्रयाण हुआ। आपके साहित्य में लौकिक प्रेम द्वारा अलौकिक आध्यात्मिक प्रेम की अभिव्यक्ति अनुपम है जात-पात, संप्रदाय आडंबर रहित भक्ति भावना से प्रेरित रज्जब उच्च कोटि के संत थे।

**बीज शब्द:** परमात्मा, आध्यात्मिकता, जीवात्मा, ऐक्यता, सद्गुण, मार्गदर्शन

**प्रस्तावना:** दादू जी के अन्यतम शिष्य संत रज्जब साहित्य रचना भक्ति साधना और प्रभावशाली कवित्व की दृष्टि से राजस्थानी संतों में उच्च और सम्मानीय पद पर आसीन है।इनके हृदय में गुरु के प्रति अगाध श्रद्धा थी। इसीलिए उन्होंने दादू की रचनाओं को विस्तृत करते हुए अंगवधू शीर्षक से संकलित किया। मध्यकालीन संतों में स्वयं के अनुभवों को कविता रूप में प्रदर्शित करने वाले संत रज्जब ने दादू द्वारा वर्णित अवांतर विषयों को विस्तृत रूप में वर्णित कर प्रभावशाली काव्य की रचना की है। आपकी रचनाएं रज्जब वाणी व सब्बंगी में संग्रहीत हैं। रज्जब का जन्म राजस्थान के सांगानेर में सन् 1567 में एक पठान वंश में हुआ था। राजस्थान के आमेर राजा के सेनानायक के पुत्र रज्जब जी की प्रवृत्ति प्रारंभ से ही आध्यात्मिक थी। साधु-संतो से समागम करना उन्हें विशेष प्रिय था। अपनी उच्च आध्यात्मिकता के फल स्वरुप 62 वर्ष की उम्र में आपने परमात्मा से साक्षात्कार कर लिया। ऐसे विद्वान व आध्यात्मिक महापुरुष जिनकी 5000 से अधिक स्वरचित कविताएं हैं। आप का काव्य भक्ति भावना, निर्गुण- निराकार की उपासना, आत्मा-परमात्मा, माया, मुक्ति, सदाचार, सद्गुरु, सत्संगति के विस्तृत वर्णन के साथ सत्संगति जाति - पाति का त्याग, अहंकार का त्याग, निष्काम कर्म की प्रेरणा से ओतप्रोत होने के कारण स्तुत्य है।

साधु संतों का अपरिमित सम्मान करने वाले रज्जब जी ने दादू का उपदेश सुन शिष्यत्व ग्रहण विवाह विचार त्याग कर विरक्त संत बन गये। लगभग 22 वर्ष की उम्र तक परम सत्ता की भक्ति भावना में डूबे रहे। दादू द्वारा रज्जब के सम्मान में दोहे लिखे जाना रज्जब व दादू के अगाध प्रेम संबंध का परिचायक है।

सरल सहज भाव अनुकूल स्वभाविक सधुक्कड़ी भाषा में अपनी उच्च प्रतिभा व कल्पना शक्ति से गंभीर चिंतन कर जीवन के प्रत्येक पक्ष पर अपने विचार प्रस्तुत किए हैं।

जाँत-पात, ऊँच-नीच व संकीर्णताओ से परे सद्चरित्र व उदार संत कवि रज्जब कवि से पहले एक महान भक्त थे। संपूर्ण साहित्य को राग व अंगों में विभाजित कर ईश्वर भक्ति को जीवन लक्ष्य के साथ काव्य का भी लक्ष्य बनाया व संपूर्ण जगत को मोह माया का त्याग कर ईश्वर भक्ति का अनुपम संदेश दिया। सर्व व्यापक, निर्गुण, निराकार, सत्-रज व तम गुणों से परे एक रस सर्वांग पूर्ण ईश्वर की विलक्षणता की तुलना किसी अन्य से नहीं की जा सकती इसीलिए रज्जब नाम स्मरण का संदेश देते हैं।

नाम बिना नाँही निस्तारा और सबै पाखंड पसारा।।1

रज्जब के अनुसार जिस तरह बिजली घटाओं में कहीं भी विद्यमान हो सकती है उसी तरह जीव में ब्रह्म भी सर्वत्र विद्यमान है। अज्ञान के पर्दे को गुरु सहयोग द्वारा हटा हम ईश्वर की प्राप्ति कर सकते हैं। रज्जब ईश्वर को ब्रह्म, निरंजन, शब्द, सत्य आदि अनेकों नामों से उद्बोधित करते हैं जिसका केवल अनुमान लगाया जा सकता है। रज्जब ईश्वर की केवल जीवात्मा में विद्यमानता पर बल देते हुए कहते हैं कि हमें पंडित व मुल्लाओं के भ्रम में ना पड़कर सिरजनहार का स्मरण करना चाहिए अतः

हेत न हिंदू धर्म, तजि तुरकी रसरीति।

रज्जब जिन पैदा किया, ताहि सूंकरि प्रीति। 2

रज्जब हिंदू-मुस्लिम से ऊपर उठ धूप, दीप, माला आदि बाह्य आडंबरों को त्याग माया से निर्लिप्त रहकर ईश्वर की प्रेम अथवा रागानुभक्ति का आह्वान करते हैं। मुक्ति की प्राप्ति का एकमात्र उपाय ईश्वर भक्ति को बताते हुए रज्जब प्रत्येक स्थिति में अपने ईश्वर का सानिध्य चाहते हैं। रज्जब भक्ति के लिए सद्गुरु साधु संगति के साथ अंतःकरण की शुद्धता पर बल देते हैं।

रज्जब ईश्वर प्राप्ति में सर्वोच्च मार्गदर्शक व परम उपकारी गुरु को सदैव सर्वोच्च स्थान प्रदान करते हैं। संत व ईश्वर की एक्यता रज्जब वाणी में दृष्टिगोचर होती है।

वृक्ष बीज मिश्रित सदा, सेवक स्वामी तेम।

पाला पानी होत है, पुनि पानी तै हेम।। 3

रज्जब अपनी वाणी में सद्गुरु को ईश्वर से भी ऊंचे पद पर आसीन करते हैं क्योंकि वही हमारे मित्रों से अज्ञान व मोह का पर्दा हटा ईश्वर प्राप्ति में सहायता प्रदान करते हैं। अतः साधु संगति सर्वोत्तम है।

साधु संगति पवित्र विचारों को जन्म देती है जिसमें मनुष्य अपनी इंद्रियों पर नियंत्रण मोह माया आसक्ति से अपना बचाव कर सकता है इसलिए रज्जब संतो को ज्ञान समुद्र, बुद्धि-विवेक की खान, ब्रह्मदर्शन का हेतु आदि उपनाम उसे सुशोभित करते हैं जिसकी कृपा के बिना ब्रह्म साक्षात्कार असंभव है।

रज्जब ने अपने भक्ति संबंधी अनुभव से जनसामान्य का मार्गदर्शन करते हुए ईश्वर प्राप्ति हेतु विश्वास, कथनी-करनी ऐक्यता, मन की एकाग्रता अहंकार त्याग, विनम्रता, परोपकार आदि सद्गुणों को अंगीकार करने का भी उपदेश दिया है। सद्गुणी को प्रभु विशेष शक्ति प्रदान करते हैं।

रज्जब रज ऊंची चढ़ी, तो तामे क्या वित वीर

साईं सौंपी शक्ति सब, नीचो चलतो नीर।। 4

विनम्रता को त्याग जो व्यक्ति गर्व करते हैं ईश्वर उनका गर्व भंग कर देता है। गर्व पर्वत पर चढ़े प्राणी विनाश को प्राप्त होते हैं अतः गर्व त्याग कर ईश्वर से दया करने की प्रार्थना करते हुए स्वयं को अधम कहते हुए बोलते हैं

कृपा करो तो उद्धरे, सेवग सुत हरि बाप।। 5

अतः रज्जब भक्ति विनय व प्रार्थना का आधार ग्रहण किए हुए प्रतिपल ईश्वर समागम हेतु आकांक्षवान है। रज्जब वाणी के अनुसार ईश्वर अगम-अगोचर व वर्णनातीत है। ईश्वर की शरण समस्त चिंताओं का नाश करती है। अतः हमें अपने ईश्वर पर पूर्ण विश्वास रखना चाहिए संदेह ग्रहण किए मनुष्य के लिए ईश्वर प्राप्ति असंभव है। हमें अपने दुखों का दोष ईश्वर के माथे पर ना मढ़ कर उन्हें निष्कर्म रूप में स्मरित करना चाहिए।

अकल कला कारज सू हैव्, सो श्री सिरजनहार ।। 6

कहकर रज्जब कर्मानुसार फल भोगने की सत्यता को प्रकट करते हैं। ईश्वर सर्वशक्तिमान है और सूर्य रूप है तथा संत ईश्वर रूपी सूर्य की किरण वैसे ही ईश्वर व गुरु दोनों का कर्म ज्ञान रूपी प्रकाश से मोह माया व अज्ञानता के अंधकार को दूर करना है। जीवन की सार्थकता हेतु दादू सिद्धांतों का अनुकरण करना परम लाभकारी है। दादू सिद्धांत आत्मानंद का विस्तृत स्त्रोत है जिस में

डुबकी लगा कर तन-मन की मलिनता को निर्मल बनाया जा सकता है। रज्जब वाणी में ईश्वर प्रेम के साथ विरह महत्व बताते हुए उन्होंने परिवर्तनशीलता के सत्य को उजागर किया है। सामाजिक व आध्यात्मिक संत के रूप में नाथपथ तंत्रमत व सिद्धमत से शब्द ग्रहण की अपनी समन्वयशील प्रवृत्ति से प्रेमाभक्ति परिपूर्ण काव्य की रचना की वह अनुपम व अद्वितीय है।

निष्कर्ष: दादू के सर्वाधिक प्रतिष्ठित शिष्य रज्जब एक महान निर्गुण संत थे जिनका साहित्य भक्ति व साधना से ओतप्रोत एवं प्रेरणा आधारित था। आपकी भक्ति साधना में रामकृष्ण एकता का भाव प्रयुक्त हुआ। रज्जब ने ईश्वर का स्थान मनुष्य की आत्मा में बताते हुए बाह्य आडंबरों, जात-पात, भेदभाव, वैमनस्य को भुलाने का संदेश देते हुए निर्गुण ब्रह्म की सर्वोच्चता सिद्ध की। पंडित हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार "रज्जब दास निश्चय ही दादू के शिष्यों में सबसे अधिक कविता लेकर उत्पन्न हुए थे उनकी भाषा में राजस्थानीपन और मुसलमानीपन अधिक है।" 7

**संदर्भ ग्रंथ:**


1. स्वामी नारायण दास रज्जब वाणी पृष्ठ संख्या 16
2. रामधारी सिंह दिनकर संस्कृति के चार अध्याय पृष्ठ संख्या 28
3. स्वामी नारायण दास रज्जब वाणी पृष्ठ संख्या 167
4. रज्जब वाणी पृष्ठ संख्या 272
5. रज्जब वाणी पृष्ठ संख्या 283
6. रज्जब वाणी पृष्ठ संख्या 327
7. हजारी प्रसाद द्विवेदी हिंदी साहित्य की भूमिका पृष्ठ संख्या 103
8. डॉ. संचियता भक्तिकालीन काव्य में समकालीनता संत रज्जब पृष्ठ संख्या 26